आधुनिकता का अर्थ

1. आधनिक, आधुनिकता, आधुनिकीकरण और आधुनिकतावाद के लिए अंग्रेजी में क्रमशः मॉडर्न (Modern), माडर्ननिटी (Modernity), माडर्नाइजेशन (modernization) और माडर्निज्म (Modernism) शब्द प्रयुक्त होते हैं। यूरोप में 16वीं सदी के मध्य से लेकर 19वीं सदी के मध्य तक आधुनिक शब्द का प्रयोग वर्तमान के पर्याय के रूप में किया जाता था।

2. आधुनिकता जिस माडर्निटी शब्द का हिंदी रूपान्तरण है, वह अंग्रेजी में ग्रीक के 'मोडो' (क्रिया-विशेषण) शब्द से आया है। इसका अर्थ है, हाल-फिलहाल, अभी का, आज, इस समय का समकालीन।

3. यूरोप में रेनेसाँ - युग में इतिहास - निर्माण का श्रीगणेश हुआ और अतीत को वर्तमान बनाया जाना ही पुनर्जागरण (रनेसाँ) कहलाया। पुनर्जागरण के उपरांत 'आधुनिक' शब्द ने आधुनिकतावाद, आधुनिकीकरण जैसे शब्दों को जन्म दिया। हिंदी साहित्य कोश भाग 1 में कहा गया है कि – "सामान्य प्रयोग में आधुनिक शब्द को बहुत दूर तक समय सापेक्ष मान लिया जाता है। जैसे - इतिहास का विभाजन प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक कालों से करते समय। पर यह आधुनिक शब्द का सुविधा निष्पन्न और लचीला अर्थ है, जिसके अनुसार हर अगला काल अपने पूर्ववर्ती की अपेक्षा आधुनिक या अति आधुनिक हो जाता है पर अपने विशिष्ट रूप में आधुनिकता का अर्थ इससे भिन्न है।आधुनिकता की पहली और अनिवार्य शर्त स्वचेतनता है।

4. बच्चन सिंह आधनिक 'हिंदी आलोचना के बीज शब्द' में कहते हैं कि आधुनिकतावाद की मुख्यत: 3 विशेषताएँ हैं - स्वात्मचेतना, आंदोलन और प्रयोग।

आधुनिकतावाद का विकास

यूरोप के साहित्य कला के क्षेत्र में बीसवीं सदी के तीसरे, चौथे व पाँचवें दशक में आधुनिकतावाद ने एक बीज के रूप में अपनी जगह बनायी थी, जिसने 1960 के आसपास एक आंदोलन के रूप में अपना पैर पसार लिया। टी. एस. इलियट की काव्यकृति द वेस्टलैंण्ड (The Westland) और जेम्स ज्वायस का उपन्यास (Ulises) सन् 1922 में प्रकाशित हुए। इन कृतियों को साहित्यिक आधुनिकतावाद का मूल माना जाता है।... हिंदी में आधुनिकतावाद के उदय को लेकर अनेक प्रकार के मत प्रचलित हैं। पश्चिम चिंतन से प्रभावित लोग 19वीं सदी के अंतिम दशकों अर्थात् भारतेंदु-युग से आधुनिकता का उदय मानते है और कुछ लोग आधुनिकतावाद का संबंध प्रयोगवाद और नयी कविता से जोड़ते है। कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि हिंदी में आधुनिकतावाद का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नयी चिंतन दृष्टि के साथ हुआ।आधुनिकता और आधुनिकतावाद शब्दों के अंतर पर ध्यान देना जरूरी है। जब हम कहते हैं कि भारतेन्दु - युग आधुनिकता का प्रवेश - द्वार है तब आधुनिकता से हमारा अर्थ होता है नवीन वैज्ञानिक, तर्कयुक्त दृष्टिकोण जो रूढिबद्धता के विरोध में खड़ा हुआ और जब हम आधुनिकतावाद के उदय की बात करते है तब इसका आशय विश्वयुद्धों के बाद जन्मी संवेदना और विचार दृष्टि से होता है।

आधुनिकतावाद की प्रमुख मान्यताएँ

1. आधुनिकतावाद में आत्मबोध, वैयक्तिकता और आत्मपरकता का भाव प्रमुख है, जिसके कारण साहित्य में असंगति, अकेलापन, पराजयवादी, मनोवृत्ति, अलगाव, अजनबीपन, संत्रास इत्यादि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई।

2. निराशा और नकरात्मकता की प्रधानता आधुनिकतावाद का प्रमुख पक्ष है, जिसके कारण आधुनिकतावादी साहित्य में निराशा, उपेक्षा, नकारात्मकता इत्यादि भावों को प्रधानता मिली।

3. आधनिकतावाद में अनास्था का भाव सर्वोपरि है । वह परंपरागत विचारों, प्रतिबद्धताओं, मान्यताओं, विश्वासों, मूल्यों के प्रति अनास्था का भाव प्रकट कर इन्हें चुनौती देता हुआ विद्रोहात्मक स्वर प्रकट करता है।

4. आधानिकतावाद ऐतिहासिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, वैचारिक, प्रकति, परंपरा, यौन दमन इत्यादि को नहीं स्वीकारता है।

5. आधुनिकतावादी साहित्य के मूल में 'मनुष्य' है, जो विडंबना, विसंगति इत्यादि के कारण अकेलेपन , अजनबीपन इत्यादि को ही अपनी नियति मानकर समाज में घुटता - तड़पता एवं संघर्षरत जीवन जीने को अभिशप्त है।

6. आधुनिकतावाद मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व को स्वीकृति प्रदान नहीं करता। आधुनिकतावादी मान्यता के अनुसार मनुष्य एक खंडित, एकाकी, पीड़ित व्यक्ति मात्र है, जिसे इस संसार में उसकी इच्छा से परे फेंक दिया गया है, जिसका न कोई वर्तमान है, न कोई सुंदर अतीत और न कोई उज्ज्वल भविष्य। एकाकी, खंडित, असहाय मनुष्य ही आधुनिकतावाद का केन्द्र - बिंदु है।

7. रूप, शिल्प तथा शैली के नित नये - नये प्रयोग साहित्यिक आधुनिकतावाद की विशिष्टता है। नयी भाषा, नयी संरचना, नयी शब्दावली, पुराने प्रचलित शब्दों का नया अर्थ, नयी साहित्यिक पदावली की झलक आदि आधुनिकतावादी साहित्य की पहचान बन गई है।

आधुनिकतावाद का हिंदी - साहित्य पर प्रभाव

हिंदी में भी आधुनिकताबोध का प्रतिफलन कई रूपों में हुआ। कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों इत्यादि में खंडित व्यक्तित्व, अजनबियत, आउटसाइडर, व्यक्ति-स्वातंत्र्य, उन्मुक्त सेक्स को लेकर बहुत कुछ लिखा गया। महानगरीय बोध में लघु मानव के अकेलेपन, संत्रास, अवसाद, टूटन, अनास्था इत्यादि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई। वस्तु - सत्य की स्वीकृति के फलस्वरूप धर्म, ईश्वर, नैतिक मूल्यों, रागात्मक संबंधों और भाव - सत्यों का विघटन एवं अहं केंद्रित व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के कारण भोगवाद की अभिव्यंजना हुई। आधुनिकता बोध के फलस्वरूप ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का खंडन साहित्य में वर्णित हुआ, जिसके फलस्वरूप छोटी घटनाएँ , प्रसंग, क्षण इत्यादि महत्त्वपूर्ण हो उठे।

आधुनिकतावाद की आलोचना

आधुनिकतावाद की घोर आलोचना हुई। डॉ. अमरनाथ हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली में लिखते हैं कि - आधुनिकता के प्रभाव से साहित का शास्त्रीय सौंदर्य - बोध संदिग्ध हो गया। साहित्यिक कृतियों को पूर्णता की दृष्टि से रात नहीं, टुकड़ों - टुकड़ों में देखने की प्रवृत्ति बढ़ गई। मनुष्य अपने सामाजिक परिवेश, परिवार तथा वर्तमान

परिस्थिति से अलगाव अनुभव करने लगा। आधुनिकतावादी रचनाएँ कई बार पहेली - सी दिखाई देने लगती हैं। मार्क्सवादियों ने आधुनिकतावादी साहित्य को प्रतिक्रियावादी करार देते हुए इसकी कटु आलोचना की। जार्ज लुकाच की दृष्टि में यह ऐतिहासिकता और सामाजिकता से कटी एक नितांत पराजयवादी विचारधारा थी तो मार्क्सवादी चिंतक अर्स्ट फिशर के अनुसार आधुनिकतावाद पूंजीवादी व्यवस्था की विसंगतियों के साथ जुड़ा एक ऐसा आंदोलन था, जिसमें कलाकार स्वयं अपने अकेलेपन से संत्रस्त है और उसका अकेलापन उसके जीवन की नियति है। जार्ज लुकाच ने आधुनिकतावाद को कला की समृद्धि नहीं बल्कि कला की अस्वीकृति मानते हुए इस पर समाज विमुखता का सबसे बड़ा आरोप लगाया। आधुनिकतावाद का मूल्यांकन – इन दोषों के बावजूद आधुनिकतावाद का जीवन के साथ - साथ साहित्य पर बहुआयामी प्रभाव पड़ा। आधुनिकतावाद के फलस्वरूप प्रतीकवाद, बिंबवाद, दादावाद, अतियथार्थवाद, भविष्यवाद, अंतश्चेतनावाद इत्यादि अनेक साहित्यिक आंदोलनों का प्रस्फुटन हुआ। आधुनिकतावाद के फलस्वरूप नवीन शब्दावली, नयी भाषिक - संरचना एवं नूतन शिल्प - विधान का अन्वेषण हुआ।